बत्तख, राष्ट्रपति पद के लिए

ग्रीन क्रोनिन, चित्र: बेट्सी लेविन, हिंदी: विदूषक

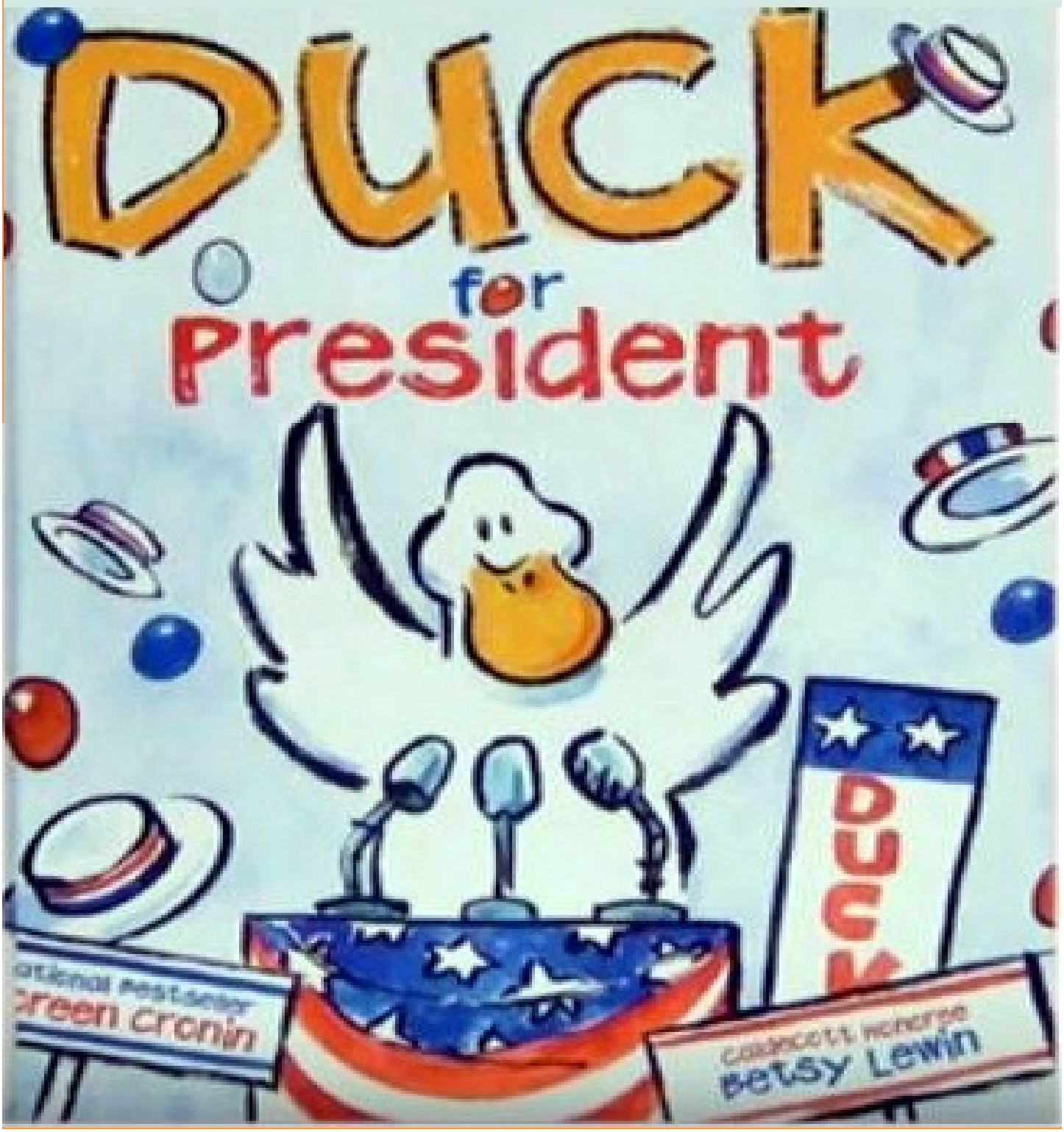

फार्म चलाना बड़ा मुश्किल काम था.

हर दिन शाम तक फार्मर ब्राउन के कपड़े, एड़ी से चोटी तक, सूखी घास, घोड़ों के बालों, बीजों, अंकुरों, पंखों, गंदगी, मिट्टी, धूल और कॉफ़ी के धब्बों से गंदे हो जाते थे.

उसके शरीर से बदबू आती थी.

फार्म पर, जानवरों को भी काम करना पड़ता था.

दिन के अंत में सुअरों के शरीर भी, रेशों-बालों से भरे होते थे.
गायों की पीठ, खरपतवार से लदी होती थी.
और भेड़ों की खाल, धूल से सनी होती थी.

और बत्तख के पंखों पर घास के तिनके और कॉफ़ी के बीज चिपके होते थे.

बत्तख को यह बेकार के काम बिलकुल नापसंद थे.

उसे अपने पंखों से, घास के तिनके और कॉफ़ी के बीज साफ़ करने से नफरत थी.

“फार्मर ब्राउन इस फार्म का मेनेजर, आखिर क्यूं है?” बत्तख ने सोचा.

“हमें अपने फार्म पर इलेक्शन की सख्त ज़रुरत है!”

फिर बत्तख ने एक पोस्टर बनाया और उसे खलिहान में लटका दिया.

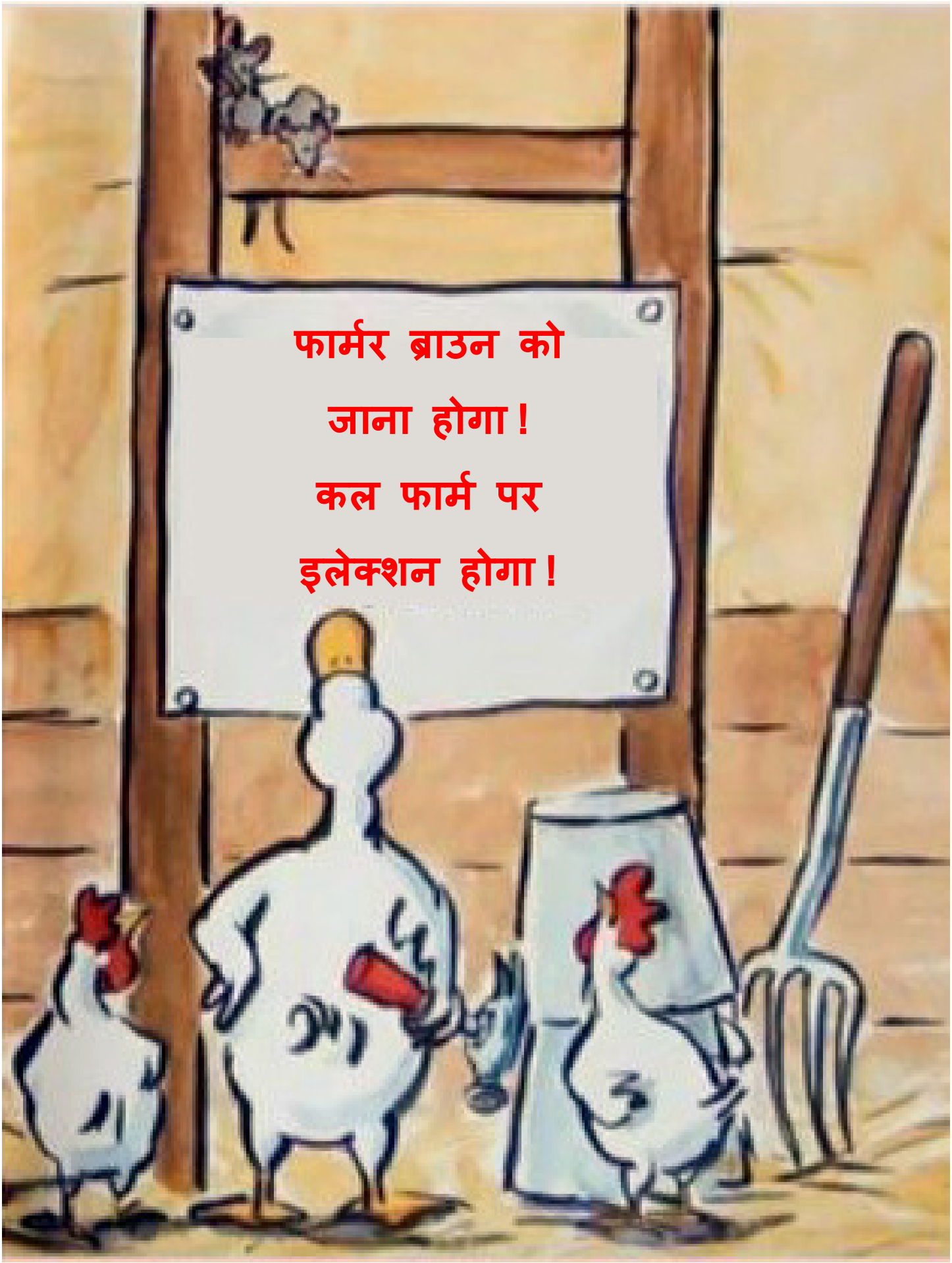
फार्मर ब्राउन को
जाना होगा!
कल फार्म पर
इलेक्शन होगा!

अगले दिन सुबह फार्मर ब्राउन को, अपने दरवाज़े के सामने एक पोस्टर टंगा मिला.

दयालू और
बेहतर फार्म के
लिए बत्तख को
वोट दो !

फार्मर ब्राउन बहुत नाराज़ हुआ. जब वो खलिहान में दौड़ के पहुंचा तो वहां जानवर वोटिंग के लिए अपने नाम रजिस्टर करा रहे थे.

तब चूहे संगठित हुए और उन्होंने ऊंचाई के मापदंड पर विरोध जताया. फिर बत्तख ने उसे काट दिया.

चुनाव वाले दिन हर जानवर ने एक इलेक्शन फॉर्म भरा और उसे चुनाव पेटी में डाला.

उसके बाद वोटों की गिनती हुई और नतीजे खलिहान की दीवार पर चिपकाये गए.

फार्मर ब्राउन -- 6 वोट
बत्तख -- 20 वोट

फार्मर ब्राउन ने दुबारा वोट गिनने की मांग की.

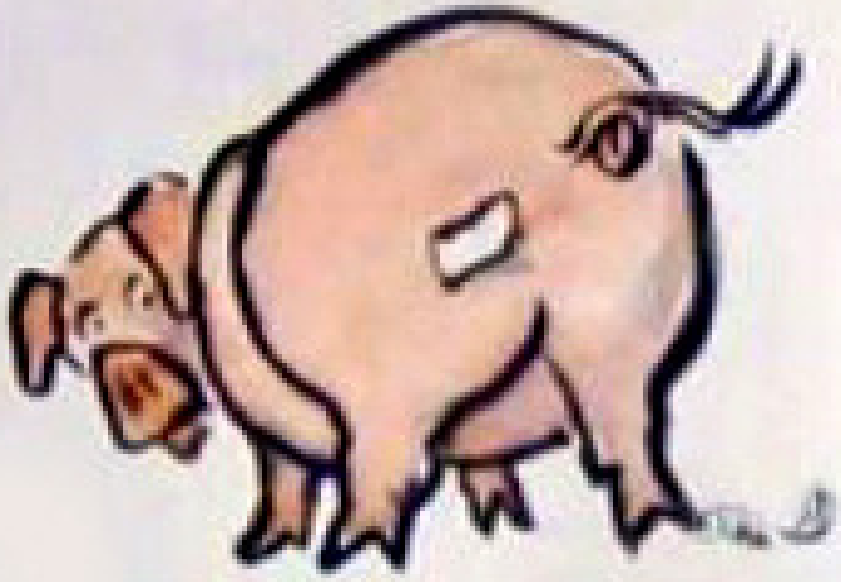

एक वोट सुअर के पीछे चिपका हुआ मिला.

इसलिए नए नतीजे इस प्रकार थे :

फार्मर ब्राउन 6 वोट

बत्तख 21 वोट

मतदाताओं ने अपनी मंशा स्पष्ट की थी.

बत्तख अब आधिकारिक तौर पर फार्म की इन्चार्ज थी.

फार्म का कामकाज कोई आसान नहीं था.

सुबह से शाम तक बत्तख काम करते-करते सिर से एड़ी तक सूखी घास, घोड़ों के बालों, बीजों, अंकुरों, पंखों, गंदगी, मिटटी, धूल और कॉफ़ी के धब्बों से गंदी हो जाती थी.

“फार्म चलाना कोई मजेदार काम नहीं है,” बत्तख ने सोचा.

उसी रात बत्तख और उसके समर्थकों ने गवर्नर के लिए बत्तख का चुनाव प्रचार करना शुरू किया.

बत्तख, फार्म का सारा कामकाज फार्मर ब्राउन के मत्थे छोड़कर, अपने चुनाव प्रचार के लिए निकल पड़ी.

उसने छोटे शहरों का दौरा किया और लोगों से मुलाक़ात की.

बत्तख ने चुनावी मोर्चों में भाग लिया.

बत्तख ने शहरों में मीटिंग्स कीं.

बत्तख ने तमाम भाषण दिए जो केवल
अन्य बत्तखों के ही समझ में आए.

इलेक्शन वाले दिन, पूरे राज्य के मतदाताओं ने, चुनाव-पत्रों पर निशान लगाया और उसे चुनाव पेटी में डाला.

मतों की गिनती हुई और नतीजे
स्थानीय अखबार में छपे.

मिस गवर्नर – 299,999

बत्तख – 300,000

गवर्नर ने दुबारा गिनती की मांग की.

दुबारा गिनती के दौरान दो वोट एक थाली ने नीचे चिपके पाए गए.

फिर नए नतीजे की घोषणा हुई :

मतदाताओं ने अपनी मंशा साफ़ ज़ाहिर की थी.

बत्तख आधिकारिक तौर पर चुनाव जीती घोषित की गयी.

राज्य को चलाना बहुत मुश्किल काम था.

सुबह से शाम तक बत्तख एड़ी से छोटी तक - तेल, स्याही के धब्बों, चिपकने वाले टेप, उँगलियों के निशान, मक्खन और कॉफ़ी के धब्बों से सन जाती थी.

अक्सर उसके सर में तेज़ दर्द भी होता था.

“राज्य को चलाना कोई बहुत मज़े का काम नहीं है,” बत्तख ने सोचा.

उस रात बत्तख और उसका स्टाफ राष्ट्रपति पद की तैयारी करने लगे.

बत्तख ने सारा कामकाज अपने स्टाफ के मत्थे छोड़ा और फिर वो चुनावी अभियान के लिए निकल पड़ी.

वो स्थानीय लोगों से मिलती, उनके साथ खाना खाती और उनके बच्चों को चूमती.

वो चुनावी मोर्चों में भाग लेती.

वो भाषण देती, पर उसे केवल अन्य बत्तखें ही समझ पातीं.

उसने देर रात के टेलीविज़न-शो में सैक्सोफोन भी बजाया.

चुनाव वाले दिन पूरे देश के मतदाताओं ने चुनाव पेटियों में अपने वोट डाले.

वोटों की गिनती हुई और नतीजे की CNN पर घोषणा हुई.

अमरीका का निर्णय

मिस्टर प्रेसिडेंट –

50, 546, 165

बत्तख –

50, 546, 170

प्रेसिडेंट ने दुबारा गिनती की मांग की.

10 चुनाव पत्र उप-राष्ट्रपति की पीठ से चिपके पाए गए.

नए नतीजे इस प्रकार थे :

अमरीका का निर्णय

मिस्टर प्रेसिडेंट –

50, 546, 165

बत्तख –

50, 546, 180

मतदाताओं ने साफ़ अपनी मंशा ज़ाहिर की थी.

बत्तख अब आधिकारिक तौर से प्रेसिडेंट बन गयी थी.

एक देश को चलाना बहुत कठिन काम था.

हर दिन काम के बाद बत्तख ऊपर से नीचे तक पाउडर, कागज़ के टुकड़ों, स्टेपल्स, सुरक्षा बिल्लों, सीक्रेट सर्विस एजेंट्स और कॉफ़ी के धब्बों से लथपथ हो जाती थी.

उसे सिर में ज़बरदस्त दर्द भी होता था.

“देश चलाने में कोई मज़ा नहीं है,” बत्तख ने सोचा.

फिर बत्तख ने अखबारों के
इश्तहारों पर नज़र डाली
* बत्तख की ज़रुरत *
किसी अनुभव की ज़रुरत नहीं
वो घास काट सके और कॉफ़ी पीस सके.

बत्तख ने उप-राष्ट्रपति को सारा कार्यभार सौंपा
और उसने दुबारा फार्म की ओर रुख किया.

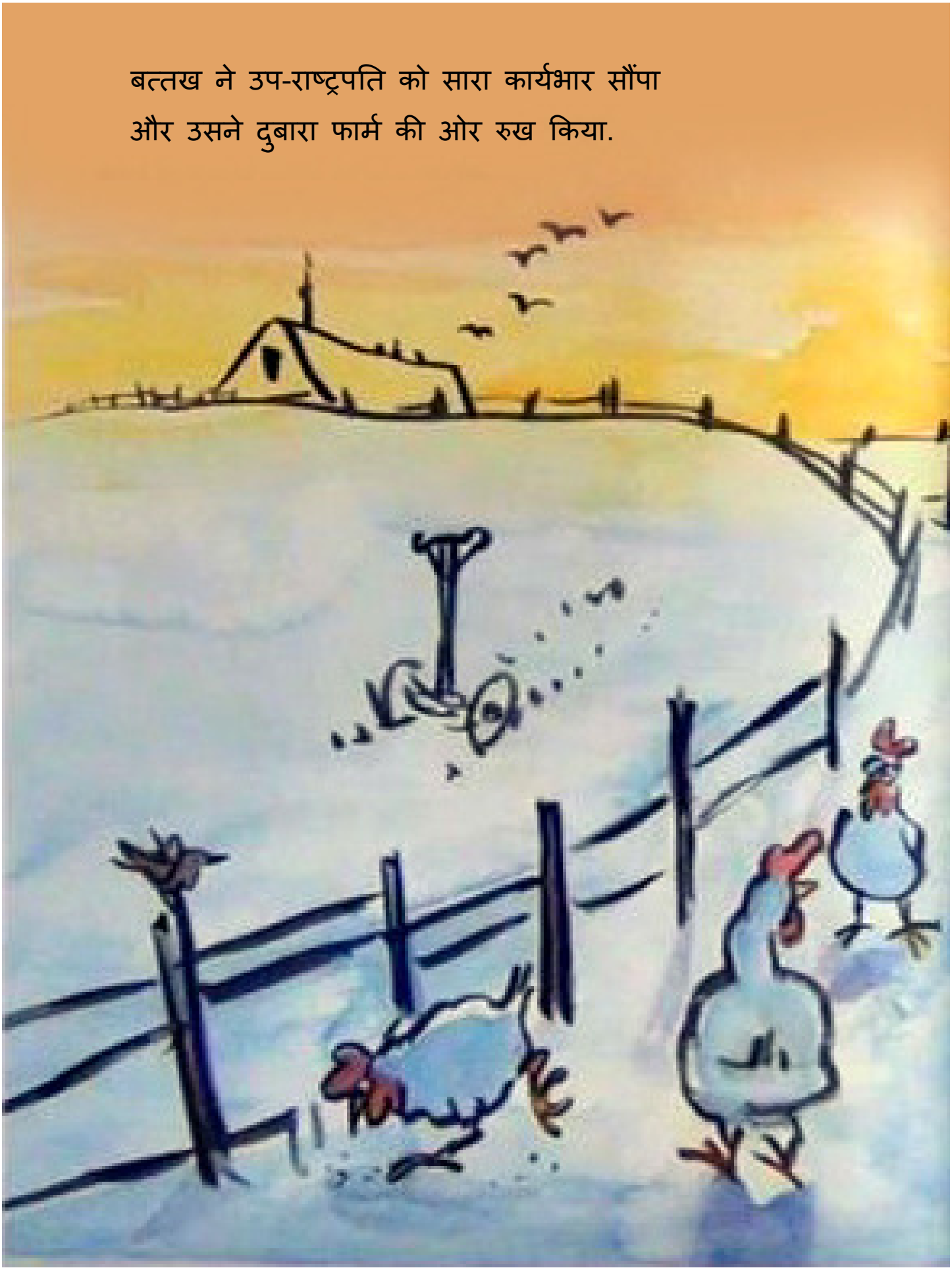

हर दिन शाम तक फार्मर ब्राउन के कपड़े सिर से एड़ी तक सूखी घास, घोड़ों के बालों, बीजों, अंकुरों, पंखों, गंदगी, मिटटी, धूल और कॉफ़ी के धब्बों से गंदे हो जाते थे.

और बत्तख ...

... वो अपनी आत्मकथा पर काम कर रही है!